मैडम भीकाजी कामा : एक महिला क्रांतिकारी के रूप में

चूड़ासमा जयेशकुमार आठमभाई
मास्टर ऑफ आर्ट्स II,
इतिहास भवन,
महाराजा कृष्णकुमारसिंहजी भावनगर विश्वविद्यालय, भावनगर, गुजरात.
मोबाइल नंबर : 9081565822
jayeshkumarchudasama2001@gmail.com

(१) प्रस्तावना:

भारत का स्वतंत्रता संग्राम संपूर्ण हिंदुस्तान को ब्रिटिशराज की गुलामी से मुक्त कराने का एक दीर्घकालीन संघर्ष कहा जाता है। जिसमें असंख्य देशभक्तों ने अपने प्राणों की आहुति दी है। स्वतंत्रता संग्राम में विभिन्न आंदोलन, बैठकें, सभा, तोड़फोड़ की गतिविधियाँ, बॉम्ब प्रवृति, दंगे, पुलिस लाठी चार्ज, ट्रेन की लूट, खादी अभियान, विदेशी कापड़ की होली, शराब बंदी, अखबार में आंदोलन कविताएं और लेख छापना, और ब्रिटिश कमिश्नर के विरोध आदि प्रवृति हुए थी। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान आंदोलन न केवल पुरुषो ने अपितु स्त्रियों ने भी बड़ी गौरवमयी आहुतियां दी है। उन आहुतिओ से निकलती हुई ऊष्मा ज्वाला के कारण अंग्रेज शासन में हाहाकार मच गया था। एक एतिहासकारने उन स्त्रियों के बारेमे इस प्रकार लिखा है, "भारत की स्वतंत्रता के लिए जो क्रांति हुई थी उसमें कई भारतीयों ने अपने बलिदान का अनुपम दृष्टांत उपस्थित किया "

साल १८५७ के प्रथम स्वाधीनता संग्राम से लेकर १९४७ तक चली क्रांतिकारी प्रवृतिओ का मुख्य उद्देश हिंदुस्तान में व्यापी हुई भारतीय नागरिकों की गुलामी, ब्रिटिश सरकार के हत्याचार, महिलाओं की निम्न स्थिति, अत्यधिक कर के माध्यम से किसान का शोषण और इस समय समाज में प्रचलित कुप्रथाओं और अंधविश्वासों की समाप्ति करना था। इस कार्य को अंजाम देने के लिए और महिलाओं को उनके अधिकार वापस दिलाने के लिए, हिंदुस्तान की बहुत सारी महिलाओंने अपना जीवन क्रांतिकारी प्रवृति में लगाकर हिंदुस्तान की स्वाधीनता स्थापित करने का प्रयास किया था। उस महिला क्रांतिकारी में झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, रानी चेनम्मा, कस्तूरबा, मनुबाई, सावित्रीबाई फुले, मैडम भीकाजी कामा, सरोजिनी नायडू, इंदिरा गांधी, आदि महिला का समावेश किया जाता हे। हिंदुस्तान की आजादी के लिए विदेश परदेश जाकर सभा और भाषण के माध्यम से हिंदुस्तान को आजादी दिलाने में विदेशी लोगो की सहाय लेकर क्रांतिकारी प्रवृत्ति करने वाली प्रथम महिला श्रीमती मैडम भीकाजी कामा का नाम बड़े सम्मान के साथ लिया जाता है। जीवन भर कांटो के मार्ग पर चलकर भी स्वतंत्रता के लिए जूझती रही, मैडम कामा कहती थी कि, "पराधीनता से मुक्ति पाने के लिए हर कठिनाई से प्रबल मुकाबला करो, अपनी आजादी खोने का मतलब है सब सद्गुणों को खो देना, अत्याचार और दमन से जूझने और संघर्ष करने का मतलब है ईश्वर की आज्ञा का पालन करना, उन्होंने अपने जीवन के अंतिम समय तक भारत को अंग्रेजी दासता से मुक्त करने का हर संभव प्रयास किया। यूरोप में वह "भारतीय राष्ट्रीयता की महान पुजारी" कहलाती थी और उनके सहयोगी उन्हें "भारतीय क्रांति की माता" के नाम से पुकारते थे।

(२) मैडम कामा का प्रारंभिक जीवन

मैडम भीखाजी कामा का जन्म २४ सितंबर १८६१ को मुंबई के एक प्रसिद्ध उद्योगपति पारसी परिवार में हुआ था। उनकी माता का नाम जीजाबाई और पिता का नाम सोराबजी फ्रामजी पटेल था। वह मुंबई के एक प्रसिद्ध व्यवसायी थे। उनका परिवार बहुत सुखी और समृद्ध था। उसके माता-पिता संपन्न होने के कारण पाश्चात्य ढंग से जीवन व्यतीत करते थे, और अंग्रेजी भाषा बोलते थे। नारी शक्ति और नारी शोषण के लिए यह बहुत जागरूक परिवार था। घर में उन्हें प्यार से "मुन्नी" के नाम से जाना जाता था। परिवार के 9 भाई-बहनों में वे स्वभाव से सबसे अलग थे। उन्होंने बचपन से ही कई भाषाएं सीखीं।

मैडम कामा ने मुंबई में एलेक्जेंड्रा गर्ल्स एजुकेशन इंस्टीट्यूट में अपनी प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा प्राप्त की। हर बार वे एक मेधावी छात्र के रूप में प्रथम आए। उनमें बचपन से ही देशभक्ति की भावना थी। वे स्वभाव से दयालु और दयालु थे। उनके शुद्ध मन में दीन-दुखियों की सेवा करने की प्रवृत्ति और देश में व्याप्त अंग्रेजी गुलामी को जड़ से उखाड़ फेंकने की राष्ट्रीय भावना थी। इसलिए वे बचपन से ही राष्ट्रीय गतिविधियों में भाग लेते थे। उसके पिता को उसकी गतिविधियों की चिंता सताने लगी। इसलिए, उन्होंने जल्द से जल्द मैडम कामा से शादी करने का फैसला किया।

(३) मैडम कामा का विवाहित जीवन

उनका विवाह ३ अगस्त १८८५ को मुंबई के एक करीबी पारसी परिवार में हुआ था। उनके पति का नाम रुस्तम के. आर. कामा था। वह एक पढ़े-लिखे धनी प्रसिद्ध परिवार का बेटा था। वे वकील और सामाजिक कार्यकर्ता थे। उनके साथ विवाह मैडम कामा के लिए सौभाग्य की बात थी। इस ई. १८८५ में जब भारती राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुए, तब दिसम्बर माह में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन हुआ। जिसमें मैडम कामा ने भाग लिया। उसमे नेताओ के उग्र भाषणों और जोरदार अपीलों से प्रभावित होकर उन्होंने कांग्रेस की सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में काम करने का मानस बना लिया।

मैडम कामा के पति रुस्तमजी कामा भारत में अंग्रेजी राज के समर्थक थे। उन्होंने शुरुआत में अपनी पत्नी की सामाजिक सुधारक गतिविधियों में सहयोग किया। मैडम कामा के समाज सुधार पैम्फलेट के संपादन में उन्होंने बहुत मदद की। लेकिन उन्हें यह पसंद नहीं था कि घर की बहू समाजसेवा के लिए सड़कों पर जाए और अस्पतालों में सेवा करे। इसलिए परिवार को लगा कि वो बचपन में जी रही हैं, शौक पूरा होगा तो सही राह पे आ जायेगी, लेकिन मैडम कामा ने अपने सामाजिक सुधार और क्रांतिकारी गतिविधियों को जारी रखा। मैडम कामां के परिवार के सदस्य ब्रिटिश समर्थक और वो ब्रिटिश विरोधी थी। वह दुखी और पीड़ितों की मदद करने के लिए ईस्पताल जाति थी तब उच्च कुल की स्त्री का इस प्रकार का कार्य करना उचित नहीं समझा जाता था। और परिवार की इज्जत को ठेस पहुंचाना माना जाता था। इसलिए वैवाहिक जीवन में हमेशा पति और परिवार के सदस्यों के साथ अनबन और टकराव रहती थी। मैडम कामा को बचपन से ही वैवाहिक जीवन में कोई दिलचस्पी नहीं थी। अतः उन्होंने संबंध विच्छेद करके अन्त में उन्होंने इंग्लैण्ड जाने का निश्चय किया।

(४) मेडम भीकाजी कामा की प्रवृत्तियां

(४.१) प्लेग रोगका फैलाव और समाज सेवा

ई.१८९६-९७ में मुंबई में प्लेग की भयंकर महामारी बहुत तीव्र गति से फैल रही थी। इस भयानक महामारी से कई स्त्री पुरुष मौत के शिकार हो गई, परंतु उनको उठाकर मरघट करने वाला कई नही था। यह बीमारी पूरे भारत में फैल गई। भारत की आर्थिक स्थिति बहुत प्रभावित हुई, विशेषकर व्यापार, वाणिज्य और उद्योग की स्थिति बहुत ही खराब थी। रोगियों और पीड़ितों के करुण रूदन से कामा का हदय द्रवित हो उठा। इस समय मैडम कामा ने बीमारी में अपनी जान जोखिम में डालकर दीन-दुखियों की सेवा में अपना भरपूर योगदान दिया। घर घर जाकर रोगियों का हाल चाल पूछना एवं उनका उपचार करना प्रारंभ कर दिया। उनके मित्रो और हितेषियो ने मृत्यु का भय दिखाकर उन्हे इस कार्य को करने न करने के लिए प्रोत्साहन किया लेकिन उन्होंने अपने सेवा चालू ही रखी। वह अपने परिवार के सुख-सुविधाओं को छोड़कर अस्पताल में प्लेग के मरीजों की सेवा करते थे। और बहुत से लोग प्लेग की बीमारी से मुक्त हुए और एक नया जीवन प्रदान किया। बीमारों की सेवा करने के कारण वह स्वयं प्लेग का रोगी हो गई। पतिने उन्हे चिकित्सा के लिए इंग्लैंड भेज दिया। उसे लगता था कि भारत से बाहर जाकर वो भारतीय राजनीति से पृथक हो जायेगी। लेकिन वह उसका भ्रम था। उचित इलाज से वह ठीक हो गया। इस हरकत के कारण उसे परिवार के कोप का सामना करना पड़ा।

(४.२) लंदन की यात्रा

वह भारत से ब्रिटिश राज को उखाड़ फेंकने के लिए राजनीति में शामिल हुए। उन्होंने जर्मनी, स्कॉटलैंड और फ्रांस में भी एक-एक साल बिताया। लंदन में वे नेता दादाभाई नवरोजी के संपर्क में आए। मैडम कामा ने उनके सचिव के रूप में काम किया। राष्ट्रीय महासभा कांग्रेस में भी काम किया। इसके अलावा लंदन में इटली के क्रांतिकारी माजिनी रॉय, श्यामजी कृष्णवर्मा, सरदारसिंहजी राणा, सरोजिनी नायडू आदि प्रसिद्ध क्रांतिकारियों के संपर्क में आए। मैडम कामा ने हाइड पार्क में स्वतंत्रता के लिए

भाषण दिया और लंदन में रहने वाले भारतीय लोगों द्वारा समर्थित किया गया। भारत में प्लेग के बाद विभिन्न क्रांतिकारी परिवर्तन हुए और लेखकों ने अंग्रेजी राज के खिलाफ लिखा। विभिन्न क्रांतिकारी गतिविधियाँ शुरू कीं।

इन क्रांतिकारियों के साथ मिलकर उन्होंने भारत में ब्रिटिश राज्य को उखाड़ने के प्रयास शुरू कर दिए। उन्होंने "भारतीय समाजशास्त्रियों के जर्नल" में कई लेख लिखे और स्थिति ने उन्हें एक सच्चा क्रांतिकारी बना दिया।

(४.३) इंडिया हाउस और मैडम कामा

इंडियन हाउस की स्थापना १ जुलाई १९०५ में हुई थी। इस समय सभी मुख्य पात्रों के संवाददाता, इंग्लैंड की सभी राजनीतिक ताकतों के प्रतिनिधि, हिंदमैन, कावेल्य, मैडम डेस्पार्क्स, श्री स्वामी, मैडम कामा, दादाभाई नवरोजी, लाला लजपतराय, श्री हंसराज, दोस्त मोहम्मद और भारतीय छात्र उपस्थित थे। .

इंडिया हाउस में साप्ताहिक बैठकें होती थीं। इसमें मैडम कामाने क्रांतिकारियों के साथ मिलकर आंदोलन को आगे बढ़ाने की योजना तैयार की। उन्होंने विभिन्न योजनाओं में उत्साहपूर्वक भाग लिया। वीर सावरकर ने "भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम" नामक पुस्तक लिखी। पुस्तक प्रकाशित होने से पहले ही वीर सावरकर को गिरफ्तार कर लिया गया था, जब अंग्रेजों को इस पुस्तक के पाठ का पता चला। मैडम कामा ने महसूस किया कि अपने विचारों को दुनिया के सामने लाने के लिए उन्हें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विविध भाषा में पुस्तक को प्रकाशित करना होगा। इसलिए उन्होंने सावरकर की पुस्तक का फ्रेंच में अनुवाद किया। इस पुस्तक के प्रचार ने लोगों में राष्ट्रवाद पैदा किया। इंडिया हाउस में हर दिन सभा की शुरुआत में "वंदे मातरम गान" गाया जाता था। और सोते समय सामूहिक प्रार्थना की गई, जिसके शब्द इस प्रकार हैं।

"एक ईश्वर, एक देश, एक भाषा
एक दौड़, एक जीवन, एक आशा"

(४.४) लाला लाजपतराय की गिरफ्तारी और मैडम कामा की अपील के शब्द।

"भाइयों और बहनों" एक सुबह मुझे यह जानकर बहुत दुख हुआ, कि हमारे सहयोगी और सच्चे देशभक्त लाला लाजपतराय को उनके घर से निकाल कर कैद कर लिया गया है। भारत की महिलाओं को इस नृशंस हत्या के खिलाफ एकजुट होना चाहिए। संकल्प लें कि जीवन भले ही अंत हो जाए, लेकिन हम गुलामी नहीं सहेंगे।

भारत, फारस और अरब के प्राचीन वैभव का गुणगान करने से क्या लाभ। जबकि आप खुद गुलामी का जीवन जी रहे हैं। वीर राजपूत, सिख, पठान, गोरखा, देशभक्त मराठा, बंगाली, पारसी, उद्यमी मुसलमान, विनम्र जैन, हिन्दू, आप अपनी परंपरा का पालन क्यों नहीं करते? क्या कारण है जो आपको गुलाम बनने पर मजबूर कर रहा है? इन बेड़ियों को तोड़ो और स्वराज्य की स्थापना करो।

आगे बताते हुए मैडम कामा कहती हैं, "मन कहता है कि जेल का द्वार तोड़कर लाला लाजपतराय को बाहर ले आऊं। हमारे ऐसे देशभक्त को ज्यादा दिन वहां जेल के प्रदूषित वातावरण में सांस लेने के लिए नहीं छोड़ा जाना चाहिए.

दोस्तों, अपने अंदर आत्मविश्वास जगाइए। आप एक अत्याचारी शासन के लिए काम नहीं करते हैं। उसका साथ छोड़ दीजिए। अपनी नौकरी से इस्तीफा दे दें। तब अंग्रेजो का निरंकुश शासन शीघ्र ही समाप्त हो जाएगा। "वन्दे मातरम्" की प्रेरणा से सारा भारतवर्ष अंग्रेजों के विरुद्ध एक हो जाए। (पेरिस समाजशास्त्री: जून 1907)

(४.५) पूर्ण स्वराज्य की माँग

राजनीतिक इतिहास में पहली बार पूर्ण स्वशासन की मांग मैडम कामा ने की थी। उन्होंने प्रस्तावित किया कि "कोई पूर्ण स्वराज सरकार अत्याचारी नहीं है, भारत में ब्रिटिश सरकार का शासन बहुत ही विनाशकारी और खतरनाक है।"

पहली बार किसी अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में मैडम कामा ने कहा था कि, "अंग्रेजों को भारत छोड़ देना चाहिए।" ब्रिटिश प्रतिनिधिमंडल ने प्रस्ताव का विरोध किया। इस प्रस्ताव पर मतदान को रोकने के लिए एक तकनीकी आधार खोज निकाला गया। यह कहा गया कि प्रस्ताव को सम्मेलन में भेजे जाने से पहले आंतरराष्ट्रीय कार्यालय में नहीं भेजा गया था। इसलिए इस पर विचार

नहीं किया जा सकता है। अधिकांश नेताओं की सहानुभूति प्रस्ताव के पक्ष में थी। हिंडमैन ने स्वयं मैडम कामा की मांग का समर्थन किया।

(४.६) भारत का प्रथम राष्ट्रीय ध्वज

मैडम भीखाजी रुस्तमजी कामा जो एक लोकप्रिय व्यक्ति हैं। अपने चित्र में वह हाथ में राष्ट्रीय ध्वज पकड़े हुए दिखाई दे रहे हैं। वास्तव में यही ध्वज उनकी सर्वव्यापक ख्याति का कारण है। एक ध्वज को किसी भी राष्ट्र की आशाओं और आकांक्षाओं के प्रतीक के रूप में देखा जाता है। सावरकर के साथ मैडम कामा ने भारतीय राष्ट्रीय ध्वज का मॉडल तैयार किया। कई इतिहासकारों ने यह भी कहा है कि मैडम कामा ने अपनी साड़ी का पलाव फाड़कर तिरंगे में लहराया। लेकिन ये सिर्फ कल्पना है। राष्ट्रीय ध्वज बनाते समय उन्होंने बहुत सोचा था।

इस राष्ट्रीय ध्वज में तीन चौड़ी पट्टियां थीं। इन सबसे ऊपर हरा रंग था, जो भारत में हरियाली का प्रतीक है। इस रंग को मुसलमानों का पवित्र रंग माना जाता है। बीच की पट्टी में भगवा रंग था, जिसे हिंदू धर्म का पवित्र रंग माना जाता है। तीसरी पट्टी में लाल था, जिसे भारतीय योद्धाओं की वीरता के प्रतीक के रूप में रखा गया था क्योंकि उन्होंने अपनी मातृभूमि के लिए अपना खून बलिदान कर दिया था। यदि हम मैडम कामा को भारतीय ध्वज के प्रथम प्रारूप की जननी कहकर पुकारे तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

ऊपर की लाल पट्टी में आठ कमल के फूल खुदे हुए थे। इस समय भारत आठ प्रांतों में विभाजित था। ८ कमल को भारत में योग साधना का प्रतीक माना जाता है। मध्य में भगवा पट्टी के एक ओर सूर्य और दूसरी ओर चंद्रमा होता है। जिसे हिंदू मुस्लिम एकता का प्रतीक माना जाता है। भारत में रहने वाले विभिन्न प्रकार के लोगों से जुड़े सभी प्रतीकों को राष्ट्रीय ध्वज में शामिल किया गया था। समाजवादी अधिवेशन में मैडम कामा के शब्दों की गूंज और राष्ट्रीय ध्वज फहराने का सिलसिला काफी देर तक चलता रहा। एक जर्मन अखबार के शब्दों में, "कांग्रेस को सफलता तभी मिली जब चमकदार रेशमी पोशाक में मैडम कामा प्रकट हुईं और उन्होंने कांग्रेस से इंग्लैंड की हत्याओं से पीड़ित देशवासियों की मदद करने की अपील की। अंत में पीड़ितों को रूप में रेशमी राष्ट्रध्वज लहराया गया। काफी देर तक नारे लगते रहे।

१८ अगस्त १९०७ को जर्मनी के स्टुटगार्ट नगर में विश्व के समाजवादी देशों का सम्मेलन आयोजित किया गया। कामाने भारतीय प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया। वह पहली महिला थी, जिसने समाजवादी देशों के इस सम्मेलन में अत्यंत साहस से काम लेते हुए सर्वप्रथम विश्व रंगमंच पर भारतीय स्वतंत्रता के प्रथम झंडे को लहराया और यह प्रस्ताव रखा, "भारत में ब्रिटिश राज्य का जारी रहना भारत के सर्वोच्च स्वार्थ के लिए निश्चित रूप से आपत्तिजनक और बहुत ही हानिकारक है और दुनिया के स्वतंत्रता प्रेमियों को चाहिए कि अब देश में रहने वाले मानव जाति के पांचवे भाग को गुलामी से मुक्त होने में सहयोग दें। क्योंकि आदर्श सामाजिक अवस्था का तकाजा यह है कि जाति किसी तानाशाही या अत्याचारी सरकार के अधीन न रहे।" मैडम कामा ने इस समय ओजस्वी भाषण देते हुए कहा था, "स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रध्वज को मैं आप लोगों को समर्पित कर रही हूं। सज्जनों उठे और पूरी आस्था तथा विश्वास से इसे प्रणाम कीजिए। कामा ने आगे कहा कि अपने देश के झंडे तले हमारी बोलने की परिपाटी है। इस प्रकार मैडम कामा ने जर्मनी के स्टुटगार्ड नगर में १९०७ ई. में सर्वप्रथम भारतीय झंडे को लहराया था। यही हमारी क्रांति का झंडा था, जिसने राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान अगणित क्रांतिकारियों को प्रेरणा दी। जवाहरलाल नेहरू इस संबंध में कहते थे, "हम इस झंडे को गर्व तथा उत्साह से ही नहीं देखते थे, बल्कि यह हमारी नसों में सनसनाहट पैदा कर देता था.., जब तक कभी हम हतोत्साहित होते थे, तब इनके दर्शन मात्र से ही हमें आगे बढ़ने का साहस प्राप्त होता था।"

कई साल बाद भारत की एक प्रतिभाशाली महिला कमलादेवी चट्टोपाध्याय को मैडम कामा से मिलने का मौका मिला। अपने संस्मरण सुनाते हुए उन्होंने कहा, "यूरोप में मैडम कामा जैसी प्रतिभावान व्यक्ति से मेरी मुलाकात हुई. मुझे पहले से ही पता था कि मुंबई का एक युवा क्रांतिकारी पेरिस में रह रहा है लेकिन उनसे मिलने का यह पहला मौका था."

ई.१९०७ में मैडम कामा द्वारा फहराया गया राष्ट्रीय ध्वज कलकत्ता में फहराए गए ध्वज के समान था। जब क्रांतिकारियों ने राष्ट्रध्वज का डिजाइन तैयार किया था तब पहला राष्ट्रीय ध्वज दिमाग में रहा होगा।

(४.७) प्रथम विश्वयुद्ध का प्रारंभ और मैडम कामा

जब ई. १९१४ में प्रथम विश्वयुद्ध का प्रारंभ हो गया तो मैडम कामा ने भारतीय सैनिकों को अंग्रेजी सेना को सहयोग न देने हेतु प्रेरित किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा था, "युद्ध में लड़ते हुए तुम मरने जा रहे हो, भारत के लिए नहीं, अपितु इंग्लैंड के लिए। भारत मां के हाथों में उन्ही अंग्रेजों ने हथकड़ियां डाली है। सोचो यह हथकड़ियां कैसे हटाई जाए। मैडम कामा की गतिविधियों से फ्रांस सरकार उनसे नाराज हो गई और उन पर तरह-तरह के प्रतिबंध लगाए उन्हें। उन्हे एक सप्ताह में एक बार हाजरी देने के लिए फ्रांस की पुलिस के समक्ष उपस्थित होना पड़ता था। प्रथम विश्वयुद्ध की समाप्ति के साथ ही फ्रांसीसी सरकार ने मैडम कामा पर लगाए गए सारे प्रतिबंध समाप्त कर दिए थे।

प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान ही मैडम कामा को बंदी बना लिया गया था। और उन पर ब्रिटिश शासन को उलट ने का अभियोग लगाकर मुकदमा चलाया गया। इसके लिए उन्हें ४ वर्ष की कारावास की सजा दी गई। उन्हें सजा भुगतने हेतु बिशी के किले में बंद कर दिया। चार वर्ष का समय बड़े ही दुःख और यातनाओं के साथ व्यतीत हुआ।

(४.८) अमेरिका की यात्रा

इंटरनेशनल सोशलिस्ट कांग्रेस में राष्ट्रीय ध्वज फहराने के कुछ सप्ताह बाद मैडम कामा ने अमेरिका की यात्रा की। उनका उद्देश्य वहां रहने वाले लोगों को भारत की वर्तमान स्थिति और दुर्दशा से परिचित कराना और उनका समर्थन हासिल करना था। अक्टूबर १९०७ में अमेरिका पहुंचते ही वे अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए निकल पड़े। अपने भाषणों के जरिए जनता के बीच जगह बनाने के लिए मंच पर आना जरूरी था। इसलिए यह अमरीकियों के बीच बहुत लोकप्रिय हो गई। अमेरिकी प्रेस ने उन्हें " इंडियन जोन ऑफ आर्क " उपाधि दी। मैडम कामा ने अमेरिका में भाषण देते हुए कहा, "हम भारतीय लोग गुलाम हैं। यहां आने का मेरा उद्देश्य ब्रिटिश शासन के अत्याचारों का पर्दाफाश करना है। और अपने देश की आजादी के लिए आपके देश का समर्थन हासिल करना है।"

इंग्लैंड हमारे देश से बहुत धन लेता है। हमारे देश से हर साल साढ़े तीन करोड़ पाउंड का पैसा बाहर चला जाता है। परिणाम स्वरूप महेसुल और ब्रिटिश नीतियों के कारण हजारों लोग मारे जाते हैं। जो जीवित हैं वे अमेरिका के दान पर जीवित हैं। हम चाहते हैं कि हमारे देश को पश्चिमी तरीके से शिक्षा मिले। हमारी अपनी संस्कृति है, लेकिन देश को आजाद कराने के लिए पैसा चाहिए।

भारत मे लोगों के पास संस्कृति है। गरीब किसानों को भी रामायण और महाभारत जैसे आध्यात्मिक ग्रंथों का ज्ञान है। हमारे देशवासियों शांति प्रिय है। उनके पास कोई हथियार नहीं है। हम चाहकर भी उससे लड़ नहीं सकते। हम बस यही चाहते हैं कि हमें उनके लिए काम न करना पड़े। पांच दिनों में बिना किसी रक्तपात के क्रांति होगी।

इस प्रकार मैडम कामा को अमेरिका के कोने-कोने से समर्थन मिला, उनकी निर्भीकता लोगों के गले उतरी और अमेरिकी जनता उनकी राष्ट्रभावना और साहस से मंत्रमुग्ध हो गई, और उन्हें अमेरिका का पूरा समर्थन मिला। उन्होंने वह लक्ष्य हासिल किया जिसके लिए वे अमेरिका गए थे।

(५) मैडम कामा के अंतिम दिन

प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान जेल की सजा काटने के बाद मैडम कामा पेरिस चली गई वहां रहकर उन्होंने कई वर्षों तक स्वतंत्रता की अलख जगाई। विदेशों में कई क्रांतिकारी गतिविधियों के बाद और ब्रिटिश सरकार द्वारा नजरबंदी और गरीबी की यातनाओं को सहने के बाद, उनका शरीर कई बीमारियों से कमजोर हो गया था। वह भारत आना चाहती था। लेकिन कई मुश्किलें थीं। उसके कई कारण थे। अंत में उन्हें ब्रिटिश सरकार द्वारा भारत लौटने की अनुमति दी गई। सरदार सिंह राणा अपनी मित्र मैडम कामा को ऐसी शल्य चिकित्सा अवस्था में देखकर बहुत दुखी हुए। संधि पर हस्ताक्षर करने के बाद ही कठोर ब्रिटिश सरकार ने उन्हें भारत आने की अनुमति दी। मित्रों और शुभचिंतकों को विदा करने के बाद वे जहाज से भारत के लिए रवाना हुए, ३५ साल विदेश में रहने के बाद भारत लौटे। समुद्री यात्राओं से अस्वस्थ शरीर और कमजोर हो जाता था।

ई ४ नवम्बर १९३४ में भारत पहुँचने पर उन्होंने देश की मिट्टी को अपनी आँखों से देखा। वृद्धावस्था से धुँधली आँखों से आँसू झर रहे थे। जब उसने भारत छोड़ा था तब वो एक साहसी युवती थी, वापस लौटने पर वह ७० वर्ष की वृद्धा के रूप में लौटीं।

उन्होंने अपनी जीवन यात्रा में बहुत सुख-दुख देखे थे। पूरा जीवन लक्ष्य प्राप्ति में लगा दिया। लेकिन दिल के किसी हिस्से में एक सीधी-सादी औरत की जिंदगी जीने और अपनों से सुख-दुख बांटने की, रीति-रिवाजों और त्योहारों को मनाने की लगन थी। मनुष्य चाहे जहां भी जाए, वतन लौटने की प्रबल इच्छा होती है। जो उसे सात समंदर पार से भी वापस ले आई।

मैडम कामा भारत आकर अपने शुभचिंतकों और दोस्तों को मिली, उसके साथ समय बिताया। लेकिन अभी भी रिश्तेदारों के बीच एक दीवार थी। खतरनाक क्रांतिकारी कही जाने वाली महिला से मिलने से भी कई रिश्तेदार डरते थे। वह अपनी अंतिम सांसें गिनने के लिए अपने गृहनगर वापस आई। अंत में उन्हें मुंबई के पारसी अस्पताल में भर्ती कराया। यहां तक कि उसका पति भी उससे मिलने नहीं आया। मोहमाया की सारी रेखाएँ नष्ट हो गईं। आठ महीने अस्पताल में रहने के बाद १३ अगस्त, १९३६ को उनका निधन हो गया। और उसका अंतिम संस्कार उसके विदिविधान अनुसार किया गया। अंतिम समय में भी उनके प्रेरणादायक वाक्य इस प्रकार थे…,

"मेरा हिंदुस्तान स्वतंत्र हो।
मेरा हिंदुस्तान में गणतंत्र की स्थापना हो।
हम एक हो।
हमारी भाषा एक हो।
और हमारा आखरी शब्द था "वंदे मातरम"।"

उन्होंने अपने कब्र के पत्थर पर खुदवाने के लिए जो शब्द चुने थे, वे इस प्रकार है, "अत्याचार का विरोध करना ईश्वर की इच्छा का पालन करना है" उनके यह शब्द उनके जीवन के संदेश को स्पष्ट कर देता है। उनके सम्मान में कोई अंतिम सभा नहीं रखी गई। वह बेरहम माहौल के बीच चली। उन्हें बस इतना संतोष था कि उन्होंने मातृभूमि की गोद में प्राण त्याग दिए। जिस शरीर ने जीवन भर नि:स्वार्थ भाव से दूसरों के दुख दूर करने का अपना कर्तव्य निभाया। मरने के बाद भी उन्हें कोई काम नहीं आया।

(६) मूल्यांकन

पूरी चर्चा के अंत में संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि मैडम भीखाजी कामा भारत की पहली ऐसी महिला थीं जिसने मुबई में जन्म लेकर विदेश में रहकर भी अंग्रेजों का विरोध किया और खुले विद्रोह में भारत का झंडा बुलंद कर दिया। उन्होंने अपना पूरा जीवन भारत की आजादी के लिए कुर्बान कर दिया। उनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता है। वह आंदोलन की नेता थीं। उनके भाषणों, लेखों, अपीलों और योजनाओं ने क्रांतिकारियों के दिलों को छू लिया।

ई.१९६० में उनकी जन्म शताब्दी के अवसर पर, उनके योगदान के बारे में जन जागरूकता जगाई गई और अखिल भारतीय महिला सम्मेलन ने उन्हें यह कहते हुए श्रद्धांजलि दी, "मैडम कामा स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने वाली शुरुआती क्रांतिकारियों में से एक थीं। उन्हें अपना घर, परिवार और मातृभूमि छोड़ना पड़ा ओर राष्ट्रवादी आंदोलनों के लिए, विदेश में शरण लेनी पड़ी। उन्होंने ही हमें पहला राष्ट्रीय ध्वज प्रदान किया था।"

इ.१९६० के गणतंत्र दिवस समारोह में महाराष्ट्र सचिवालय रोड का नाम बदलकर "मैडम भीखाजी कामा रोड" कर दिया गया। उनकी याद में एक डाक टिकट भी जारी किया गया। जिसमें उनकी तस्वीर बनाई गई है। उनकी एक तस्वीर मुंबई और पूना के वीर सावरकर हॉल में लगी है। दक्षिण दिल्ली में एक महत्वपूर्ण इलाके का नाम उनके नाम पर "भिखाईजी कामा प्लेस" रखा गया है।

इसमें कोई शक नहीं कि बहुत कम मौकों पर उन्हें बहुत कम श्रद्धांजलि मिली है। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम के लिए जितने साल काम किया हम उन्हें उतनी बार याद भी नहीं करते। एक बात बिल्कुल सच है कि मैडम भीखाजी रुस्तम कामा एक देशभक्त, स्वतंत्रता संग्राम की अग्रणी, पथप्रदर्शक, वीर और साहसी महिला क्रांतिकारी और व्यक्तित्व की स्वामिनी थी। उन्हे चले गए बहुत साल हो गए लेकिन वो आज भी भारतीय लोगो के धड़कते दिलों के कोई कोने में वो जिंदा है और हमेशा उसका स्थान बना रहेगा।

संदर्भ सूची :

1. Sethna Khorshed Adi. "Madame Bhikhaiji Rustom Cama", Ministry of Information and Broadcasting Government of India, Edition 1987.
2. Rachana Bhola yamini. "The Life and Times of Madam Bhikaji Cama", Ocean Book Pvt.Ltd., New Delhi.
3. Kapil, "Medam Bhikaji Cama", Prabhat Prakashan, New Delhi, Edition 2015
4. नागोरी इस.एल., नागोरी कान्ता, "क्रांतिकारी महिला कोश", मालिक एण्ड कंपनी, जयपुर, प्रथम संस्करण : २०१४, पृष्ठ : १०२.
5. वी.एन.सिंह, "भारत की महान वीरांगनाए", रावत प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : २०१३, पृष्ठ : १८४.
6. जैन मीरा, "भारत की वीरांगनाए",विद्याविहार, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण: १६८५ पृष्ठ : ४७.
7. माथुर.एल.पी, "भारत की महिला स्वतंत्रता सेनानी", आविष्कार पब्लिकेशन, डिस्ट्रीब्यूटर्स, जयपुर, प्रथम संस्करण : २००३ पृष्ठ : ५७
8. रचना भोला यामिनी, "मेडम भीकाजी कामा", प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली।
9. गुप्ता विजयकुमार, "मेडम कामा", सुरभि प्रकाशन, दिल्ली।
10. भट्ट मंदाकिनी वासुदेव, "रणजंजार देवता मेडम कामा", भरीरी पब्लिकेशन, संस्करण : २०२०
11. राणा महेन्द्र, "स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं का योगदान", राज पब्लिकेशन, संस्करण : २०१९
12. राजम कृष्णन, "भारतीय स्वातंत्र्यता संग्राम में महिलाई", राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, आवृति २०१९, पृष्ट क्रम : १२
13. પટેલ જીતેન્દ્રભાઈ, "આપણા ક્રાંતિકારીઓ", પાશ્વ પબ્લિકેશન, અમદાવાદ, આવૃત્તિ : ૨૦૧૧, પૃષ્ઠ : ૧૨૪-૨૫.
14. પંડ્યા વિષ્ણુભાઈ, પંડ્યા આરતીબેન, "ગુજરાત ધરદિવડા અને તેજનક્ષત્રો", નવભારત સાહિત્ય મંદિર, આવૃત્તિ : ઓક્ટોબર ૨૦૦૮, પૃષ્ઠ : ૩૭૩.